डॉ. क्रेग कीनर, मैथ्यू व्याख्यान 6, मैथ्यू 3-4

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। मैथ्यू 3-4 पर यह सत्र 6 है।

हम जॉन द बैपटिस्ट की जीवनशैली, वह हमारे लिए जो मॉडल हैं, उसके बारे में और जॉन द बैपटिस्ट के संदेश के बारे में भी बात कर रहे हैं।

परन्तु अब यूहन्ना आने वाले यीशु से मिलता है, जिसके मार्ग की उसने घोषणा की थी। हम मैथ्यू अध्याय तीन, छंद 13 से 17 में ईश्वर के पुत्र के बपतिस्मा को देखते हैं। यह कुछ ऐसा है जिसे विद्वान आमतौर पर शर्मिंदगी की कसौटी पर खरा उतरते हैं क्योंकि यह ऐसा कुछ नहीं है जिस पर कोई इस बात पर जोर देना चाहेगा कि यीशु को जॉन द बैपटिस्ट द्वारा बपतिस्मा दिया गया था। .

लेकिन इसे कृदंत में सुना जाता है, जो किसी ऐसी चीज़ पर जल्दबाजी करने के लिए अलंकारिक अभ्यास था जिस पर कोई ज़ोर नहीं देना चाहता था। लेकिन जॉन की मितव्ययता को देखो. जॉन कहता है कि मैं तुम्हें बपतिस्मा देने के योग्य नहीं हूँ।

मुझे आपके द्वारा बपतिस्मा लेना चाहिए। अब, निःसंदेह, ऐसा इसलिए है क्योंकि वह सिर्फ यह घोषणा कर रहा है कि आने वाला व्यक्ति पवित्र आत्मा और आग में बपतिस्मा लेगा। इसलिए वह यीशु से पवित्र आत्मा का बपतिस्मा चाहता है।

वह ऐसा है, मैं योग्य नहीं हूँ। मेरा जल बपतिस्मा पवित्र आत्मा में आपके बपतिस्मा की तुलना में कुछ भी नहीं है। हम इस परिच्छेद में यीशु के प्रति परमेश्वर की स्वीकृति को देखते हैं।

स्वर्ग का हिस्सा, आपके पास पुराने नियम की थियोफनीज़, पुराने नियम के रहस्योद्घाटन, ईजेकील 1 की तरह भाषा है, जब भगवान खुद को किबर नदी या यशायाह 64 के पास ईजेकील के सामने प्रकट करते हैं। इसके अलावा, इस मार्ग में आत्मा एक कबूतर की तरह यीशु पर आती है। और मैं कुछ क्षणों में इसके बारे में और अधिक बात करूंगा।

लेकिन पहले मैं स्वर्गीय आवाज के बारे में बात करूंगा, जिसे बाद में रब्बियों ने बैट क्यूओएल कहा। यह स्वर्ग से आई आवाज़ की तरह है। पुराने नियम में कभी-कभी आपके पास स्वर्ग से एक दिव्य आवाज होती है।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 22 में आपके पास यह है, जब प्रभु का दूत स्वर्ग से बोलता है और कहता है, इसहाक को मत मारो, इत्यादि। इस परिच्छेद में तीसरे दिव्य साक्ष्य के रूप में आपके पास यह स्वर्गीय आवाज़ है। धर्मग्रन्थ एक दिव्य प्रमाण है।

यशायाह 40 और पद 3, जंगल में किसी के चिल्लाने की आवाज़, प्रभु का मार्ग तैयार करो। इसके अलावा, भविष्यवाणी, क्योंकि जॉन बैपटिस्ट एक भविष्यवक्ता है जो प्रभु का वचन बोलता है। और फिर आपके पास इस अनुच्छेद में यीशु के तीसरे प्रमाणन के रूप में स्वर्गीय आवाज़ है।

अब, कबूतर की पृष्ठभूमि क्या है? पृष्ठभूमि की तलाश करने वाले कुछ लोगों का कहना है कि यहूदी साहित्य में, इज़राइल की तुलना कभी-कभी कबूतर से की जाती थी, लेकिन यह यहाँ बहुत उपयोगी नहीं है क्योंकि स्पष्ट रूप से, इज़राइल यीशु का वंशज नहीं है। रब्बी साहित्य में कुछ ग्रंथ कबूतर के रूप में पवित्र आत्मा की बात करते हैं। यह यहाँ अद्भुत ढंग से काम करेगा, लेकिन ऐसा बहुत दुर्लभ है।

तो, प्राचीन काल में मैथ्यू के श्रोताओं की सबसे बड़ी संख्या के लिए सबसे स्पष्ट पृष्ठभूमि संभवतः वह कबूतर रही होगी जो आपके पास उत्पत्ति अध्याय 8 में है, नूह की बाढ़ के बाद, जहाँ कबूतर एक अर्थ में पुनर्स्थापना का प्रतीक है, का प्रतीक है नई रचना या मनोरंजन। और यह कुछ ऐसा हो सकता है जहाँ आत्मा नए युग, नए युग का लाने वाला है, और इसलिए कबूतर के रूप में आता है। दूसरी ओर, यदि कोई चीज़ उड़ने वाली है, तो आपके पास यहाँ कुछ होना चाहिए और एक कबूतर उड़ने वाली चींटी या चमगादड़ या उस जैसी किसी चीज़ से बेहतर काम करता है।

तो, किसी भी मामले में, कभी-कभी चमगादड़ की आवाज़ या स्वर्गीय आवाज़, रब्बियों ने कहा कि यह धर्मग्रंथ की प्रतिध्वनि होगी। और इस मामले में, यह कुछ धर्मग्रंथों को प्रतिध्वनित कर सकता है। यह भजन 2 और पद 7 को प्रतिध्वनित कर सकता है, जहाँ भगवान कहते हैं, वादा किए गए डेविडिक वंश के बारे में, वह कहते हैं, यह मेरा बेटा है।

और कई विद्वान इसे वहाँ देखते हैं। इसके अलावा, कई विद्वान उत्पत्ति 22 की प्रतिध्वनि देखते हैं, जहाँ भगवान इब्राहीम को अपने प्रिय पुत्र का बलिदान देने के लिए कहते हैं। और मार्क में, वह पृष्ठभूमि हो सकती है, उत्पत्ति के ग्रीक अनुवाद और मार्क में हमारे पास जो कुछ है, उसके बीच शब्दांकन बहुत समान है।

हालाँकि, मैथ्यू में, यह उत्पत्ति 22 का संकेत नहीं हो सकता है, क्योंकि मैथ्यू ने बाद में यशायाह 42:1 की व्याख्या की है, जो मेरे सेवक, मेरे प्रिय के बारे में बात करता है जिस पर मैंने अपनी आत्मा रखी है। मैथ्यू ने इसे मैथ्यू 12:18 में एक तरह से व्याख्यायित किया है जो यहाँ स्वर्गीय आवाज़ के समान है। तो, यह यहाँ भजन 2 का संयोजन हो सकता है, जो आने वाले राजा और यशायाह के सेवक की घोषणा है जो पीड़ित होगा।

किसी भी मामले में, हमारे पास संभवतः मैथ्यू और मार्क दोनों में एक संकेत है, शायद एक सूक्ष्म संकेत, शायद केवल मैथ्यू के दर्शकों का मूल ही इसे पकड़ता है, लेकिन यीशु की दोहरी भूमिका का संकेत, एक राजा की अपेक्षित मसीहा की भूमिका, बल्कि एक पीड़ित सेवक की भूमिका भी। यीशु आत्मा द्वारा अभिषिक्त राज्य लाने वाला है। आपके पास ये पाठ मार्क में एक-दूसरे के करीब हैं, जो कि छोटा है, लेकिन आपके पास ये मैथ्यू के सुसमाचार में भी हैं, आत्मा के बारे में ये पाठ एक-दूसरे के बहुत करीब हैं।

मैथ्यू 3:11 में जॉन बैपटिस्ट ने घोषणा की कि यीशु आत्मा में बपतिस्मा देने वाला है। खैर, 3:16 में, बपतिस्मा के समय यीशु पर आत्मा आती है। तो, यीशु तब आदर्श बन जाएगा कि आत्मा-बपतिस्मा प्राप्त जीवन कैसा दिखता है। खैर, क्या आत्मा-बपतिस्मा प्राप्त जीवन केवल सफलता और आनंद का एक मॉडल जैसा दिखता है, और सब कुछ ठीक हो जाता है? यह बहुत अद्भुत होगा।

लेकिन इसके तुरंत बाद, अगली बार जब हम आत्मा के बारे में सुनते हैं, तो आत्मा मैथ्यू 4:1 में है, जहां आत्मा यीशु को कठिनाई का सामना करने के लिए जंगल में ले जाती है। और वह हमारे लिए एक आदर्श भी है। लेकिन अगर हम आत्मा के तरीकों का पालन करते हैं, तो कभी-कभी आत्मा हमें मुसीबत में ले जाएगी, जिससे हम जरूरी नहीं खुश होते हैं, लेकिन भगवान उन स्थितियों के माध्यम से काम करते हैं।

मैथ्यू अध्याय 4 की ओर मुड़ते हुए, यीशु परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। मैथ्यू अध्याय 3 के अंतिम पद 3:17 में, भगवान ने सार्वजनिक रूप से यीशु को अपना पुत्र घोषित किया है। तो अब शैतान उस पर प्रतिक्रिया करता है क्योंकि यीशु जंगल में है।

शैतान चुनौती देता है, ठीक है, चूंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, इसे साबित करो, इसे प्रदर्शित करो। आप याद कर सकते हैं कि उत्पत्ति अध्याय 3 में साँप क्या करता है। क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा है? और अध्याय 27, श्लोक 40 से 43 में भी, आपके पास लोग हैं जो यीशु से इस तरह की बातें कह रहे हैं। ठीक है, यदि तुम सचमुच परमेश्वर के पुत्र हो, तो यह करो।

दरअसल, मैथ्यू अध्याय 27 में, वे सुलैमान की बुद्धि 2:18 में सुलैमान की बुद्धि के नाम से एक यहूदी अपोकलिफ़ल कार्य को प्रतिध्वनित करते हैं, जहां दुष्ट भगवान के बच्चे, धर्मी व्यक्ति से कहते हैं, यदि तुम वास्तव में भगवान के बच्चे हो, तो परमेश्वर आपके लिए यह करेगा और परमेश्वर तुम्हें बचाएगा। परन्तु दुष्ट ही ऐसा कहते हैं। और यह दुष्ट ही हैं जो अध्याय 27 में ऐसा कहते हैं।

यह दुष्टता का प्रतीक है जो कहता है कि शैतान यीशु को ईश्वर के पुत्र के रूप में चुनौती देता है। शैतान यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में बुलाए जाने को फिर से परिभाषित करना चाहता है। खैर, पिता घोषणा करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

यह एक शक्तिशाली नियम है। शैतान सत्ता के अन्य मॉडलों से अपील करता है कि वे यह परिभाषित करने का प्रयास करें कि पुत्रत्व का क्या अर्थ है। जादूगर एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में बदल सकते हैं।

ऐसा माना जाता था कि वे चीजों को रूपांतरित करने में सक्षम थे। और इसलिए, पत्थरों को रोटी में बदलना एक ऐसी चीज़ थी जिसे किसी जादूगर या ओझा ने करने के बारे में सोचा होगा। यीशु कहीं और भोजन बढ़ाते हैं, लेकिन वह हेरा-फेरी के आगे नहीं झुकेंगे क्योंकि उन्हें अपने स्वर्गीय पिता पर भरोसा है।

वह कहते हैं, तुम्हारे पिता को तुम्हारे मांगने से पहले ही पता चल जाता है कि तुम्हें क्या चाहिए। इसके अलावा, ऐसे भ्रमित दूरदर्शी भी थे जिन्होंने सोचा था कि वे यरूशलेम की दीवारों को गिरा

सकते हैं या जॉर्डन नदी को उसका हिस्सा बना सकते हैं। और उन्होंने ये काम करने की प्रतिज्ञा की और असफल रहे।

खैर, शैतान चाहता है कि यीशु मंदिर के उच्चतम बिंदु से छलांग लगाए और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करे। यीशु ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। और यीशु, मैथ्यू के सुसमाचार में इसका चरमोत्कर्ष, यीशु एक राजनीतिक क्रांतिकारी या सांसारिक राजनीतिक प्रकार के शासक की भूमिका से इनकार करते हैं।

शैतान चाहता है कि वह उन लोगों की तरह बने जो रोम के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व करने की कोशिश कर रहे हैं और वैकल्पिक सम्राट या कुछ और बनने की कोशिश कर रहे हैं। और वह चाहता है कि यीशु झुककर उसकी आराधना करे। वह कहता है, तुम झुककर मेरी आराधना करो।

मैं तुम्हें पृथ्वी का सारा राज्य दे दूँगा। और यीशु कहते हैं, हे शैतान, मेरे पीछे हट जाओ। दिलचस्प बात यह है कि यह भाषा बाद में मैथ्यू के सुसमाचार में एक और समान सेटिंग में दोहराई जाती है।

क्योंकि इस अन्य परिच्छेद में, पतरस कहता है, आप मसीहा हैं। तुम्हें कष्ट नहीं होगा। पीटर, उसी तरह जैसे यहाँ शैतान, क्रूस के बिना राज्य की बात करता है, बिना कष्ट के महिमा की बात करता है।

और यीशु ने उस से कहा, हे शैतान, मेरे पीछे से दूर हो, क्योंकि पतरस वहाँ शैतान के मुखपत्र की चर्चा करता है। पुनः, उसी प्रकार जैसे मैथ्यू 27 में यीशु का मज़ाक उड़ाने वाले लोग, यदि आप वास्तव में ईश्वर के पुत्र हैं, तो क्रूस से नीचे आ जाएँ, शैतान की भी प्रतिध्वनि कर रहे हैं। जंगल में यीशु के 40 दिन इस्राएल के समान हैं जिसकी जंगल में 40 वर्षों तक परीक्षा हुई।

आप इज़राइल के साथ समानताओं को याद कर सकते हैं जिनके बारे में हमने अध्याय दो में बात की थी। इसके अलावा, आप एलईडी शब्द को भी देख सकते हैं। मैथ्यू और ल्यूक के पास वह है।

मार्क वास्तव में इस अर्थ में अधिक नाटकीय है कि, मार्क में, यह कहता है कि उसने डाला, आत्मा ने यीशु को जंगल में फेंक दिया। राक्षसों को बाहर निकालने के लिए भी इसी शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह बहुत सशक्त शब्द है।

आत्मा ने उसे एक तरह से बाहर निकाल दिया। लेकिन यहाँ यह शब्द नेतृत्व किया गया है। यह वही शब्दावली है जो अक्सर इसराइल को जंगल में ले जाने वाले ईश्वर के लिए उपयोग की जाती है।

और फिर यीशु ने व्यवस्थाविवरण से तीन पाठ उद्धृत किये। 40 दिनों का उपवास निर्गमन 24 इत्यादि में मूसा को याद दिलाता है। यह एलिय्याह को भी याद दिलाता है जिसने 40 दिनों तक उपवास किया था, लेकिन एलिय्याह भी मूसा के आदर्श का अनुसरण कर रहा था।

प्रथम राजा 19. यीशु यहाँ हमारे लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। यह जॉन की तरह, जंगल में जाकर बलिदान का एक मॉडल है।

वह व्यक्तिगत हितों के लिए सत्ता का दुरुपयोग करने से इनकार करने का एक आदर्श भी हैं। हमें यहां कुछ और भी नजर आता है. बाइबल में हम अन्य लोगों के बारे में जो देखते हैं, यीशु उसमें फिट बैठता है।

वह पैटर्न में फिट बैठता है, ठीक उसी तरह जैसे उसके उत्थान से पहले उसका क्रॉस पैटर्न में फिट बैठता है। बाइबल में परमेश्वर के अधिकांश सेवकों का उनके मंत्रालय से पहले और अक्सर परीक्षण किया गया था। इब्राहीम और सारा के बारे में सोचो, और उन्हें बच्चे के लिए कितना इंतज़ार करना पड़ा।

जोसेफ के बारे में सोचो. उसने स्वप्न में देखा कि उसके भाई उसे प्रणाम कर रहे हैं। अंततः उसे गुलाम के रूप में बेच दिया जाता है।

गुलाम बनने के बाद उसे जेल जाना पड़ता है। और फिर अंततः एक दिन में, उसे मिस्र का वज़ीर बना दिया गया और अंततः उसके भाई आए और उसके सामने झुक गए। इससे पहले कि वह अपने परिवार के लिए, बल्कि मिस्र और आसपास के कई लोगों के लिए उद्धारकर्ता होने के अपने आह्वान को पूरा कर पाता, इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, उसे परीक्षण से गुजरना पड़ा।

मूसा के साथ भी ऐसा ही, रेगिस्तान के पिछले हिस्से में 40 साल तक। डेविड के साथ भी ऐसा ही है. 1 शमूएल के अध्याय 16 में उसे राजा के रूप में अभिषिक्त किया गया है, लेकिन अंततः राजा बनने से पहले शाऊल ने उसे सताया है।

जब मैं अपने ईसाई जीवन में उस समय तक की सबसे गहरी परीक्षा से गुज़रा, मेरा मतलब है, मेरे ईसाई होने से पहले, आस्तिक न होने से बुरा कुछ भी नहीं था। मेरा मतलब है, एक बार जब मैं आस्तिक था, तो उसकी तुलना में कुछ भी नहीं था। मेरे पास अनन्त जीवन था, लेकिन सबसे खराब परीक्षा जिससे मैं गुजरा, ऐसा लग रहा था कि मेरा मंत्रालय नष्ट हो गया है, ऐसा लग रहा है जैसे झूठे आरोपों के कारण, किसी और के इलाज के कारण मुझसे सब कुछ छीन लिया गया है।

और भगवान ने मुझसे कहा कि मुझे उस व्यक्ति को माफ करने की जरूरत है। मैं बस इसके बीच में था. मैं दर्द से बहुत सुन्न हो गया था और मैं इसे समझ नहीं पा रहा था, लेकिन मुझे लगा कि भगवान ने मुझे बाइबल में इन लोगों की ओर इशारा किया है।

उन्होंने कहा, एलिय्याह तुम्हारे समान ही जुनूनी व्यक्ति था। जब उस ने जुनिपर के पेड़ पर घुटने टेककर कहा, हे परमेश्वर, मुझे मरने दे, और वे मेरे पुरखाओं से भी अच्छे हैं। डेविड बिल्कुल आपके जैसा ही आदमी था।

जब शाऊल उस पर अत्याचार कर रहा था और दाऊद लगभग टूट गया था और वह अंदर जाकर नाबाल को मारने के लिए लगभग तैयार था। और यिर्मयाह तुम्हारे जैसा था। जब उस ने कहा, शापित हो वह दिन कि मैं उत्पन्न हुआ।

और मुझे ऐसा लगा जैसे भगवान ने मुझसे कहा था, मेरे बच्चे, तुम भगवान के आदमी हो, इसलिए नहीं कि तुम किस चीज से बने हो, क्योंकि तुम मेरे द्वारा बनाए गए हर किसी की तरह धूल और राख से बने हो। आप परमेश्वर के जन हैं क्योंकि मैंने आपको बुलाया है और मेरी कृपा आपके लिए पर्याप्त है। और अगले दो वर्षों तक, जैसे-जैसे वह परीक्षण जारी रहा, मुझे पता चला कि मैं कितना कमजोर था, लेकिन भगवान ने उन दो वर्षों के दौरान मुझे बचाए रखा।

और उन दो वर्षों के अंत में, मुझे समझ आया कि मैं भगवान का आदमी हूँ, इसलिए नहीं कि मैं किसी और से अलग किसी चीज से बना हूँ। आप भगवान के पुरुष या महिला हैं, इसलिए नहीं कि आप किसी अति शानदार चीज़ से बने हैं। हमें वह होने का दिखावा नहीं करना है जो हम नहीं हैं।

हम ईश्वर की कृपा के कारण ईश्वर के पुरुष और महिला हैं, क्योंकि ईश्वर हमें बुलाते हैं, क्योंकि ईश्वर हमारा उपयोग करते हैं, क्योंकि ईश्वर हमारी परवाह करते हैं। और अंत में, ईश्वर को इस बात का श्रेय मिलता है कि उसने हमें ऐसे लोग बनाने के लिए हमारे जीवन में क्या किया है जिनका वह उपयोग कर सकता है। तो, हम यीशु को भी इसका अनुकरण करते हुए देखते हैं।

यीशु हम में से एक बन गया और वह परीक्षण से गुजरा जैसे हम भी परीक्षण से गुजरते हैं। हम शास्त्र की शक्ति भी देखते हैं। यीशु केवल परमेश्वर की आज्ञाओं का हवाला देते हैं और बिना किसी प्रश्न के परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं।

बाइबल इसका समाधान करती है। इतना ही। शैतान पवित्रशास्त्र का भी उद्धरण देता है।

मैथ्यू अध्याय चार में, वह यीशु के लिए धर्मग्रंथ उद्धृत करता है, लेकिन वह इसे संदर्भ से बाहर उद्धृत करता है। यीशु सादृश्य द्वारा लागू होता है जो वास्तव में उनके द्वारा उद्धृत अंशों के प्रासंगिक बिंदु पर फिट बैठता है। हमें इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि शैतान पवित्रशास्त्र को संदर्भ से बाहर उद्धृत करता है क्योंकि वह आज भी कई लोगों के जीवन में ऐसा करता है।

लेकिन यीशु व्यवस्थाविवरण से तीन उद्धरण देते हैं। मृत सागर स्क्रॉल में, यदि वे हमें इस बात का कोई अंदाज़ा देते हैं कि यीशु के समय में धर्मग्रंथ के सबसे लोकप्रिय भाग कौन से थे, तो मृत सागर स्क्रॉल में व्यवस्थाविवरण को सबसे अधिक बार उद्धृत किया गया है, यशायाह को दूसरा, और भजन को तीसरा। लेकिन यीशु व्यवस्थाविवरण से उद्धरण देते हैं।

वह उन आदेशों को उद्धृत करता है जो परमेश्वर ने इस्राएल को जंगल में दिए थे, जिनका इस्राएल अपने परीक्षण के दौरान कई बार पालन करने में विफल रहा। परन्तु यीशु परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। जब शैतान चाहता है कि वह पत्थरों को रोटी में बदल दे, तो यीशु ने जो पहला पाठ उद्धृत किया वह व्यवस्थाविवरण अध्याय आठ और पद तीन से है।

और इसका संदर्भ अध्याय आठ और श्लोक पांच में अपने बेटे, इज़राइल के लिए भगवान का वफादार प्रावधान है, जहां यह कहा गया है, इज़राइल मेरे बेटे की तरह है और मैंने जंगल में उनके परीक्षण के दौरान उन्हें खिलाया था। व्यवस्थाविवरण आठ और पद दो। तो, यीशु संदर्भ जानता है।

वह परमेश्वर का पुत्र है जिसका जंगल में परीक्षण किया जा रहा है। बाइबल उसे बताती है कि परमेश्वर के पुत्र को आदर्श रूप से कैसे जीना चाहिए। उसे अपने पिता के प्रावधान पर भरोसा है।

कोई व्यक्ति केवल रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकले हर शब्द से जीवित रहता है। ठीक है, शैतान उसे भजन 91, छंद 11 और 12 उद्धृत करता है, लेकिन शैतान इसे चुनिंदा रूप से उद्धृत करता है। श्लोक तीन से 10 तक का संदर्भ अपने लिए खतरा पैदा करने, जैसे किसी मंदिर के शिखर से कूदने की बात नहीं कर रहा है।

वे बाहरी खतरों से सुरक्षा की बात कर रहे हैं। यह यह नहीं कह रहा है कि ठीक है, आप ऐसा करो और भगवान आपकी रक्षा करेंगे, बल्कि यह कह रहा है कि जब आप किसी स्थिति में हों, तो आप भगवान की सुरक्षा पर भरोसा कर सकते हैं। रब्बी, जब वे धर्मग्रंथों पर बहस करते थे, और यीशु अपने कुछ समकालीन शिक्षकों के साथ ऐसा करते थे, लेकिन रब्बी, जब कोई किसी पाठ को उद्धृत करता था, तो वे अक्सर एक काउंटर पाठ को उद्धृत करते हुए कहते थे, नहीं, आप ऐसा नहीं कर सकते। इसकी सही व्याख्या करना क्योंकि यह पाठ यही कहता है।

और शैतान जो सुझाव देता है यीशु उसका प्रतिकार करता है। वह कहता है कि तुम्हें परमेश्वर की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए। व्यवस्थाविवरण 6.16. अब ध्यान दें कि वह कहां से उद्धरण दे रहा है।

उसने अभी-अभी व्यवस्थाविवरण 8 से उद्धरण दिया है। अब वह व्यवस्थाविवरण 6 से उद्धृत कर रहा है, बहुत दूर नहीं। वह इस संदर्भ में आगे बढ़ रहा है कि ईश्वर अपने बच्चे से क्या अपेक्षा करता है, जिस तरह से इज़राइल को होना था, और निश्चित रूप से जिस तरह से यीशु, ईश्वर के अंतिम पुत्र के रूप में होना चाहिए। संदर्भ में ईश्वर को परखना जंगल में इज़राइल की शिकायत को संदर्भित करता है कि ईश्वर पर्याप्त आपूर्ति नहीं कर रहा था।

यीशु ऐसा नहीं करेंगे. वह अपने स्वर्गीय पिता पर निर्भर है। मैथ्यू 4.9-10. खैर, राजनीतिक साम्राज्य की तलाश में कई मसीहा के दावेदार थे।

कई लोगों को आशा थी कि रोम पर सैन्य विजय के माध्यम से परमेश्वर का राज्य आएगा। आपके पास वह कुमरान युद्ध स्कॉल में है। कुछ लोगों ने अपने मिशन की पुष्टि के लिए संकेत देने की कोशिश की और असफल रहे, जैसा कि मैंने पहले बताया था।

लेकिन यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6.13 को उद्धृत किया है, जो उस श्लोक से कुछ ही छंद दूर है जिसे उन्होंने अभी उद्धृत किया है। तो, उसी संदर्भ से, यहां संदर्भ एक सच्चे ईश्वर से प्रेम करने और इसलिए अन्य सभी देवताओं को अस्वीकार करने की मांग करता है। खैर, अगर शैतान कह रहा है, झुको और मेरी पूजा करो, तो वह खुद को दूसरे देवता के रूप में स्थापित कर रहा है।

यीशु ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। धर्मग्रंथ को उसी संदर्भ से उद्धृत करें जिसका वह उपयोग कर रहा है। हम इस परिच्छेद में उन लोगों की विजय को भी देखते हैं जो दृढ़ रहते हैं।

यह इस जीवन में हमारे लिए हमेशा नहीं आता है, लेकिन यह हमेशा आता है। ईश्वर सदैव विश्वासयोग्य है। और परीक्षण की इस अवधि में, हम पद 11 पर आते हैं, परीक्षण का अंत, और यीशु कहते हैं, विजय।

वह कहता है, शैतान, दूर हो जाओ, और शैतान चला जाता है। याद रखें कि यीशु ने अध्याय 4, छंद 6 और 7 में स्वर्गदूतों की तलाश करने से इनकार कर दिया था। यदि वह कूद गया तो उसे पकड़ने के लिए उसने स्वर्गदूतों पर निर्भर रहने से इनकार कर दिया। परन्तु अब देवदूत आते हैं और उसकी सेवा करते हैं।

यह वही बात है जो आप गेथसमेन में देखते हैं, जहां उन्होंने कहा था, नहीं, अगर मैंने पिता से मेरी रक्षा करने के लिए कहा होता तो उन्होंने मुझे स्वर्गदूतों की 12 सेनाएं दी होतीं। लेकिन मैं पिता की इच्छा के अधीन हूं। और अब स्वर्गदूत आते हैं और यीशु की सेवा करते हैं।

कभी-कभी हम ईश्वर से जो कुछ भी चाहते हैं उसके लिए प्रार्थना करते हैं। और भगवान हमसे प्यार करते हैं। भगवान हमारी जरूरत के समय हमारे पास पहुंचते हैं।

लेकिन प्रार्थना का अर्थ केवल वह प्राप्त करना नहीं है जो हम ईश्वर से चाहते हैं। प्रार्थना हमारे जीवन को ईश्वर को समर्पित करने और यह देखने के बारे में है कि ईश्वर हमसे क्या चाहता है और ईश्वर क्या करना चाहता है। यह संसार जिसकी परमेश्वर को परवाह है, इसीलिए यीशु ने कहा, पहले राज्य की खोज करो।

और यही कारण है कि जब वह हमें एक आदर्श प्रार्थना देता है, तो सबसे पहले वह हमारे पिता है, आपका नाम पवित्र माना जाता है। और फिर वह प्रार्थना सहित दूसरों के पास आता है, हमें परीक्षण में न ले जाएं, क्योंकि यहां यीशु ने परीक्षण के आगे घुटने नहीं टेके हैं। फिर यीशु को बड़े शहर में जाना पड़ा।

अब यह शहरी मानकों के हिसाब से बड़ा शहर नहीं है, लेकिन नाज़ारेथ की तुलना में यह एक बड़ा शहर था। कफरनहूम में शायद कुछ हज़ार लोग थे। इसमें कहा गया है कि यीशु गलील में चले गए, संभवतः पेरिया के पास जहां जॉन को गिरफ्तार किया गया था।

किसी ने भी नाज़ारेथ का आविष्कार नहीं किया होगा। वास्तव में किसी ने कैपेरनम का आविष्कार भी नहीं किया होगा। यह ऐसा कुछ नहीं था जिसके बारे में गलील के बाहर किसी ने बात की हो, विशेषकर तब जब यीशु कहते हैं, बेथसैदा तुम पर शोक, तुम पर धिक्कार चोराज़िन, तुम पर दुःख, कफरनहूम।

आप जानते हैं, गलील के बाहर, किसी ने चोराज़िन के बारे में नहीं सुना था। तो, इस प्रकार की बातें स्पष्ट रूप से यीशु के बारे में गैलीलियन की प्रारंभिक स्मृतियों तक जाती हैं। ये बहुत स्पष्ट हैं,

यहां तक कि जो व्यक्ति अन्य चीजों पर सवाल उठा रहा है उसे भी इस प्रकार की चीजों को स्वीकार करना चाहिए।

अब यह उनके सार्वजनिक मंत्रालय से पहले है और शायद यह एक मिशन रणनीति है। नाज़ारेथ उसके संदेश को स्वीकार नहीं करेगा, लेकिन कफरनहूम एक रणनीतिक स्थान पर था। इसमें कुछ और लोग भी थे।

इसमें शायद एक हजार, शायद 2,000 थे, अक्सर कहा जाता है कि यह 2,000 के आसपास है। यह तिबेरियास या सेफ़ोरिस जितना बड़ा नहीं था। वे गलील के दो प्रमुख शहर थे, लेकिन वे भी बहुत यूनानीकृत थे।

यीशु राज्य के बारे में कहीं अधिक पारंपरिक यहूदी संदेश लेकर आ रहे थे। पॉल बाद में यूनानी क्षेत्रों में चला गया, लेकिन यीशु मुख्य रूप से गलील आदि के अरामी-भाषी क्षेत्रों में रह रहा था। गलील झील, कफरनहूम के चारों ओर की सड़कें एक महान जगह थीं क्योंकि यह एक ऐसी जगह थी जहाँ बहुत सी चीज़ें एक-दूसरे को काटती थीं।

इसलिए, वहां से उसे गलील के बहुत से हिस्से तक पहुंच प्राप्त थी। वह वहां से पेरिया तक पैदल जा सकता था। वह वहां से चलकर हेरोड फिलिप्स क्षेत्र तक जा सकता था।

साथ ही, वहाँ यीशु की सेवकाई, यद्यपि बाद में वह कहता है, कफरनहूम तुम पर हाय, क्योंकि यदि तुम में होने वाले चमत्कार सदोम में होते, तो वे धूल और राख से पश्चाताप करते। लेकिन कफरनहूम, भले ही सभी ने पश्चाताप नहीं किया, कफरनहूम के अधिकांश लोग यीशु में विश्वास करने लगे। और हम इसे बाद में जानते हैं क्योंकि पुरातत्व हमें दिखाता है कि बाद के समय में वहां एक बहुत मजबूत यहूदी ईसाई समुदाय था।

इसके अलावा, रब्बियों को वहां यीशु के एक अनुयायी के बारे में पता था, जिसे वे कफरनहूम के याकोव, कफरनहूम के जैकब कहते थे, जो बीमारों के लिए प्रार्थना करने के लिए जाने जाते थे और वे ठीक हो जाते थे क्योंकि वह यीशु, येशुआ हनेत्ज़ी का अनुयायी था। मैथ्यू के विरोधियों और यीशु के अनुयायियों के विरोधियों ने उनके गैलिलियन मूल की आलोचना की। और वे अक्सर टोरा के प्रति वफादार न होने के कारण गैलिलियों की आलोचना करते थे, लेकिन यह सिर्फ क्षेत्रीय पूर्वाग्रह था।

यह वैसा ही है जैसे अमेरिका के कुछ हिस्सों में कुछ लोग अमेरिका के कुछ अन्य हिस्सों और विभिन्न देशों में नीचे की ओर देखते हैं, कुछ हिस्से कुछ अन्य हिस्सों में नीचे की ओर देखते हैं। खैर, गलील को यहूदिया की सीमा माना जाता था। इसे परिष्कृत नहीं माना जाता था।

यरूशलेम के फरीसी, जामनिया के रब्बी, वे गलील में नीचे देख सकते थे। गैलिली ने दूसरी शताब्दी में भी रब्बी नेतृत्व को नजरअंदाज कर दिया, लेकिन गैलिलियों ने वास्तव में टोरा को बनाए रखा। उन्होंने कानून बनाए रखा।

उत्खनन से हमें पता चलता है कि गलील के अधिकांश लोग कानून का पालन करने के प्रति बहुत गंभीर थे। जोसेफस उनके बारे में बात करता है कि वे यरूशलेम में त्योहारों में जाने के लिए तीन दिनों तक पैदल चलते हैं। सारे कस्बे एक साथ वहाँ चलेगें।

यीशु का गलील में बसना भी अन्यजाति मिशन का पूर्वाभास देता है। इसीलिए मैथ्यू ने यहां अन्यजातियों के गलील के बारे में यशायाह अध्याय नौ को उद्धृत किया है। अब, वाल्टर ग्रंडमैन ने कहा, नहीं, गैलील का मतलब है कि गैलील अन्यजाति था, और इसलिए यीशु जो गलील में बड़ा हुआ वह भी एक अन्यजाति था।

खैर, वाल्टर ग्रंडमैन के पास ऐसा कहने का एक कारण था। वाल्टर ग्रंडमैन एक नाज़ी धर्मशास्त्री थे, जो नाज़ियों के लिए काम करते थे, और वे यीशु को यहूदी धर्म से मुक्त करना चाहते थे। वे चाहते थे कि यीशु यहूदी न हों।

लेकिन हम पुरातत्व से जानते हैं कि इस काल में पूरे गलील में यहूदी बस्तियाँ थीं। लोग यहूदिया से पलायन कर गये थे। वे गलील में बस गये।

तो, यह प्रतीकात्मक रूप से अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व कर रहा है क्योंकि गलील में भी कुछ अन्यजाति समुदाय थे, लेकिन वे स्थान नहीं जहाँ यीशु जा रहे थे। वे यहूदी थे। मैथ्यू अध्याय चार श्लोक 17 में स्वर्ग के राज्य की बात करता है।

राज्य के आगमन के संदर्भ में यीशु की शिक्षा को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में यीशु की शिक्षा में यह केंद्रीय था। मैथ्यू इसे स्वर्ग का राज्य कहता है।

मार्क, अक्सर समान कहावतों के साथ, इसे ईश्वर के राज्य के रूप में बोलेंगे। राज्य का आमतौर पर क्या मतलब होता है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस भाषा का उपयोग कर रहे हैं और शब्द की शब्दार्थ सीमा क्या है। अंग्रेजी में, कभी-कभी हम किसी व्यक्ति या स्थान के बारे में सोचते हैं।

लेकिन ग्रीक और हिब्रू में, जिन शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद किंगडम के रूप में किया जाता है, वे विशेष रूप से शासन या शासन या अधिकार को संदर्भित करते हैं। जाहिर है, यहूदी लोगों का मानना था कि ईश्वर वर्तमान में शासन करता है। उन्होंने कहा कि जब वे शेमा का पाठ करते हैं, तो वे राज्य का जुआ अपने ऊपर ले लेते हैं।

वे पहचान रहे हैं कि ईश्वर ब्रह्मांड का राजा है। यहाँ का शेमा वह स्थान है जहाँ प्रभु हमारा परमेश्वर है। ईश्वर एक है, यह पहचानना कि ईश्वर ही ईश्वर है।

परन्तु वे उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब परमेश्वर बिना किसी चुनौती के राज्य करेगा। और कभी-कभी जब वे राज्य के बारे में बात करते थे, तो वे उसी के बारे में बात करते थे। इसलिए, उनके पास कद्दीश नामक एक प्रार्थना थी।

इसके आरंभिक संस्करण, कद्दीश में, इसका कुछ भाग इस प्रकार था। तेरा महान् और महिमामय नाम पवित्र माना जाए। आपका राज्य शीघ्र और शीघ्र आये।

खैर, यह भगवान की प्रार्थना जैसा लगता है, है ना? यीशु ने उसे प्रभु की प्रार्थना में अपनाया। अब, यीशु, यदि वह इसे अपना नहीं रहा है, तो वह अपना रहा है, कई यहूदी प्रार्थनाएँ थीं जिनकी भाषा समान प्रकार की थी। लेकिन यीशु यहाँ कहते हैं, जैसे जॉन बैपटिस्ट ने कहा, स्वर्ग का राज्य, घोषित करो कि यह निकट है।

अब, विद्वानों के बीच बहस चल रही है। क्या इसका मतलब यह है कि राज्य इतना निकट आ गया है कि वह लगभग यहीं है या राज्य आ गया है? कुछ हद तक, यह एक अर्थ संबंधी मुद्दा है क्योंकि किसी भी तरह से, यह दखल देने वाला आसन्न है। यह हमारे जीवन पर अपनी माँगें रखता है।

राज्य आ रहा है. यह लगभग यहाँ है। हमें इसके लिए तैयार होने की जरूरत है.

और यीशु के व्यक्तित्व में, यह वही है जिसे आरंभिक चर्च में ऑरिजन ने अटाबासिलिया कहा था, जो स्वयं में राज्य था। यहाँ राजा था और उसमें राज्य निश्चित रूप से विद्यमान था। खैर, यह राज्य, ईश्वर की यह माँग, ईश्वर का यह शासन, ईश्वर का यह नियम निम्नलिखित संदर्भ में उदाहरण दिया गया है।

अध्याय 4 श्लोक 18 से 22 में, यीशु शिष्यों को उसका अनुसरण करने के लिए कहते हैं। और अध्याय 4 श्लोक 23 से 25 में, यीशु अपने शासनकाल को प्रदर्शित करता है। वह बीमारी पर अपना अधिकार प्रदर्शित करता है।

और फिर अध्याय 5 से 7 में, हमारे पास यीशु के राज्य के नैतिक निहितार्थ हैं। यदि राज्य हाथ में है, तो हमें उस आने वाले राज्य के प्रकाश में कैसे रहना चाहिए? यदि हमें आने वाले राज्य के प्रकाश में पश्चाताप करना है, तो पश्चाताप की जीवनशैली कैसी दिखती है? पश्चाताप का सच्चा फल क्या है जो हमसे माँगा जाता है? वह मैथ्यू अध्याय 5 से 7 होगा। अब, ऐसा न हो कि आप सोचें कि मैं सीधे अध्याय 8 पर चला गया हूँ। नहीं, मैं आपको बस वही बता रहा हूँ जो आने वाला है। लेकिन यीशु के मंत्रालय में राज्य अभी तक नहीं है।

क्योंकि यीशु के अनुयायियों के लिए, हम मानते हैं, जैसा कि यहूदिया और गलील में यीशु के समकालीनों ने माना था, हम मानते हैं कि राजा का आना अभी बाकी है। लेकिन हम कुछ और भी पहचानते हैं. यीशु के अनुयायियों के रूप में, हम मानते हैं कि जो राजा आने वाला था वह आ गया है।

और इसलिए, जो राज्य अभी आना बाकी है उसने पहले ही इतिहास पर आक्रमण कर दिया है और भगवान का शासन पहले से ही इस दुनिया में एक विशेष तरीके से काम कर रहा है। इसलिए, हम अक्सर राज्य के दो चरणों या दो चरणों में होने की बात करते हैं। पहले से ही राज्य का नहीं, मसीहा दो बार आता है।

वे राजा के आने और राज्य के आने की आशा कर रहे थे, वे मृतकों के जीवित होने की आशा कर रहे थे। खैर, मृतकों में से सबसे पहले उठने वालों को पहले ही पुनर्जीवित किया जा चुका है। यीशु जी उठे.

तो, परमेश्वर का राज्य पहले से ही हमारे बीच में कार्य कर रहा है। और पूरे नये नियम में आपकी यही सोच है। मैं नहीं जानता कि हम इसे कैसे चूक सकते हैं।

गलातियों अध्याय 1 और पद 4, यीशु ने हमें इस वर्तमान दुष्ट युग से बचाया है। रोमियों अध्याय 12 और पद 2, इस वर्तमान युग के अनुरूप नहीं हैं, बल्कि अपने मन के नवीनीकरण द्वारा परिवर्तित हो जाते हैं। कुछ अनुवाद यह स्पष्ट नहीं करते कि यह युग के बारे में बात कर रहा है, लेकिन यह ग्रीक में है।

इसके अलावा इब्रानियों अध्याय 6 में, यह कहा गया है कि हमने आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चख लिया है। इफिसियों अध्याय 1, 2 कुरिन्थियों अध्याय 1 और 5, ग्रीक में आत्मा की बात करते हैं, अरहाबोन। यह एक यूनानी शब्द था जिसका इस्तेमाल व्यावसायिक दस्तावेजों में डाउन पेमेंट के लिए किया जाता था।

यह वास्तव में हिब्रू के साथ-साथ सेमेटिक भाषाओं का भी उधार शब्द है। अरहाबोन, यह डाउन पेमेंट, पहली किस्त के लिए एक शर्त है। तो, हमें पहले ही दीक्षा की शुरुआत, हमारी भविष्य की विरासत का उद्घाटन प्राप्त हो चुका है।

ओह, यह शानदार होने वाला है। लेकिन हमारे पास इसकी पहली किस्त है क्योंकि हमें आत्मा दी गई है। हमारे हृदयों में भावना का अर्थ है कि हमें आने वाली दुनिया का पूर्वाभास हो गया है।

इसीलिए पौलुस 1 कुरिन्थियों अध्याय 2 श्लोक 9 और 10 में कहता है, जो बातें आंख ने नहीं देखीं, न कान ने सुना, और जो मनुष्य के हृदय में नहीं चढ़ीं, वे बातें परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें अपनी आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया है। ये वो बातें हैं जिन्हें हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते.

मेरा मतलब है, बाइबिल अक्सर प्रतीकात्मक भाषा, परवलयिक सर्वनाशी प्रकार की भाषा, शायद काव्यात्मक भाषा के साथ उनका वर्णन करती है। लेकिन आत्मा में, हमें वास्तव में उस भविष्य की विरासत का पहले से ही स्वाद मिल जाता है। हम इस बात के पूर्वानुभव का आनंद ले रहे हैं कि हमेशा-हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में रहना कैसा होगा।

इसलिए, हमें आत्मा के अपने अनुभव का आनंद लेना चाहिए। रोमियों 8 में इसी प्रकार की समानता है। रोमियों 8 पद 23 वास्तव में आत्मा की बात करता है।

हमारे पास हमारे अनुभव का पहला फल है। राज्य का चरमोत्कर्ष, यदि आप मार्क के सुसमाचार को देखें, तो जॉन और यीशु राज्य की घोषणा करते हैं, और फिर यह चरमोत्कर्ष है, अध्याय 15 में राज्य की भाषा और राजभाषा का चरमोत्कर्ष है, क्रूस पर यीशु। मार्क इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि राज्य क्रूस के माध्यम से आता है और उस बिंदु पर ध्यान केंद्रित करता है।

निस्संदेह, मैथ्यू के पास वह बात है। लेकिन मैथ्यू में, चरमोत्कर्ष बिल्कुल अंत में आता है, अध्याय 28, जब स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी अधिकार यीशु को दे दिए जाते हैं। यीशु स्वर्ग के राज्य में राजा है।

अब, यीशु अपने चेलों को अपने पीछे चलने और अपने अधिकार के अधीन होने के लिए बुलाकर, लोगों के मछुआरों को बुलाकर अपना अधिकार प्रदर्शित करता है। उन लोगों के संदर्भ में जो सुसमाचार में कुछ चीजों पर संदेह कर सकते हैं, ठीक है, हम उन्हें बता सकते हैं, देखो, अधिकांश संतों ने शिष्यों की तलाश करना अपमानजनक माना। आप बाहर जाकर शिष्यों को अपने पीछे लाने का प्रयास नहीं करेंगे।

आपने शिष्यों द्वारा आपको खोजकर आपका सम्मान करने की प्रतीक्षा की। और इसलिए, अधिकांश संत ऐसा नहीं करेंगे, यह उस तरह की कहानी नहीं होगी जैसी आप किसी ऋषि के बारे में गढ़ेंगे। इसके अलावा, हम मैथ्यू और ल्यूक की साझा सामग्री में अन्य स्रोतों से जानते हैं, कि यीशु ने मैथ्यू 8:19 से 22 और ल्यूक 9:57 से 62 में अपने शिष्यों को बुलाया था।

इसके अलावा, हम जानते हैं कि यीशु के शिष्य थे, 12 अच्छी तरह से प्रमाणित हैं। और हम इस बारे में पाठ्यक्रम में बाद में बात कर सकते हैं। लेकिन आम तौर पर शिक्षकों के पास अपने काम का प्रचार करने के लिए शिष्य होते थे।

और इसलिए, कि यीशु के पास शिष्य होंगे, यह उचित है, आप इसकी अपेक्षा करेंगे। इसके अलावा, कुछ विद्वानों ने बताया है कि मैथ्यू 4:19 की संरचना, जहां वह शिष्यों को अपने पीछे चलने के लिए कहते हैं, स्पष्ट रूप से सेमेटिक है। लेकिन शायद यहां सबसे स्पष्ट बात यह है कि मछुआरों का आविष्कार करने का कोई कारण नहीं है।

मेरा मतलब है, मछुआरे किसान नहीं थे। शायद इसीलिए उनका और कर संग्रहकर्ता का नाम दिया गया है और दूसरों के व्यवसायों का नाम नहीं दिया गया है। शायद वे उतने प्रतिष्ठित नहीं थे, ऐसा कहा जा सकता है।

लेकिन मछुआरे उतने प्रतिष्ठित नहीं थे। मेरा मतलब है, यदि आप यीशु के लिए कुछ अनुयायी बनाना चाहते हैं, तो आप शास्त्री बनाएंगे, आप फरीसी बनाएंगे, आप एक या दो सद्दूकी भी बना सकते हैं। लेकिन यीशु लोगों के मछुआरे, मछली के मछुआरों को लोगों के मछुआरे बनने के लिए कहते हैं, जो अक्सर हमारी पृष्ठभूमि पर आधारित होता है।

मछुआरे। गैलिलियन मछली और अनाज पर बहुत अधिक निर्भर थे। विक्रेता मछली को सुखाते हैं, विक्रेता मछली को संरक्षित करने के लिए उसे सुखाते हैं या नमकीन बनाते हैं।

और गैलिलियन मछुआरे आमतौर पर किसानों से बेहतर स्थिति में थे। अक्सर जब भगवान लोगों को बुलाते हैं, तो वह हमेशा नहीं, बल्कि अक्सर हमारे पिछले अनुभवों का उपयोग करते हैं। मूसा और दाऊद चरवाहे थे।

खैर, वह उन्हें इस्राएल के लिए चरवाहा बनाता है। ये लोग मछली पकड़ने वाले थे। वह उन्हें लोगों का मछुआरा बनाता है।

वह अक्सर अन्य तरीकों से वह कौशल ले सकता है जो हमें पहले ही दिया जा चुका है और उन्हें अपने राज्य के लिए उपयोग करने के साथ-साथ हमें अन्य प्रकार के उपहार भी दे सकता है। जब मैं नास्तिक था, तब भी मुझे प्राचीन यूनानी चीजें और रोमन चीजें पढ़ना पसंद था। मैं रोमन इतिहासकारों, ग्रीक क्लासिक्स, ग्रीक दार्शनिकों आदि को पढ़ रहा था।

और जब मैं ईसाई बन गया, तो मैंने सोचा, अरे नहीं, मैं अब बस बाइबल पढ़ने जा रहा हूँ। लेकिन मैंने जो पाया, अंततः मैंने पाया कि, ओह, इसमें से कुछ ने वास्तव में मुझे एक विद्वान के रूप में अपने काम के लिए कुछ पृष्ठभूमि प्राप्त करने में मदद की, यहूदी स्रोतों जितनी नहीं, जिनके बारे में मैंने कोई प्रशिक्षण नहीं लिया था, लेकिन इससे मुझे मदद मिली मेरे पास बहुत सारी पृष्ठभूमि है। वास्तव में, एक बिंदु था, मैं एक बहुत नया ईसाई था और मुझे ऐसा होना चाहिए था, यह दूसरे वर्ष का लैटिन में था, और मुझे सीज़र के गैलिक युद्ध का अनुवाद करना था।

सीज़र एक रोमन शासक था, बहुत लंबे समय तक नहीं, वह बहुत जल्दी मारा गया, लेकिन वह रोम का शासक बनना चाहता था। और उन्होंने एक रोमन जनरल के रूप में गैलिक वॉर नामक एक पुस्तक लिखी। मुझे उसका अनुवाद करना था।

और घर जाते समय, मैं सोच रहा था, आप जानते हैं, मैं अपना लैटिन नहीं करना चाहता। मैं सीज़र का अनुवाद नहीं करना चाहता। मैं अब बस बाइबल पढ़ना चाहता हूँ क्योंकि मैंने यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्याग दिया है।

मैंने बाइबिल को पलटा और अपनी उंगली नीचे डाल दी। यह कोई अच्छी व्याख्या पद्धति नहीं है, लेकिन इस अवसर पर मैंने ऐसा किया। मैंने अपनी उंगली नीचे रख दी, यह आशा करते हुए कि यह कहेगा, सब कुछ त्याग दो और मेरे पीछे आओ।

इसके बजाय, यह ल्यूक अध्याय 20 था। इसमें कहा गया था, जो सीज़र का है वह सीज़र को दो और जो ईश्वर का है वह ईश्वर को दो। खैर, यह उस पाठ का सार्वभौमिक अर्थ नहीं है।

मैं हर किसी से यह नहीं कह सकता कि आपको सीज़र का अनुवाद करना होगा, लेकिन भगवान ने मेरे मामले में इसका इस्तेमाल किया। और मैंने अपना होमवर्क किया। लेकिन वैसे भी, भगवान अक्सर हमारी पृष्ठभूमि की चीजों को ले लेंगे।

हमें अपना सब कुछ उसे समर्पित कर देना चाहिए, लेकिन कभी-कभी वह उन उपहारों का उपयोग करेगा जो उसने हमें दिए हैं, अक्सर उन तरीकों से जिनकी हमें उम्मीद नहीं होती। हमें उसका अनुसरण करने के लिए उन्हें छोड़ना पड़ सकता है, लेकिन कभी-कभी वह उनका उपयोग वैसे भी करेगा। और फिर कुछ चीजें जो हमें रखनी होती हैं, हम उन्हें छोड़ देते हैं और हमें वे वापस नहीं मिलतीं।

यह सब ठीक है। वह जानता है कि सबसे अच्छा क्या है। वह भरोसेमंद है।

यीशु उन्हें अनुसरण करने के लिए कहते हैं। फिर, केवल सबसे कट्टरपंथी प्राचीन शिक्षकों ने शिष्यों को उनका अनुसरण करने के लिए बुलाया और विशेष रूप से अनुसरण करने के लिए अपने संसाधनों को पीछे छोड़ दिया। पारिवारिक व्यवसायों को छोड़ना आम तौर पर अपमानजनक होगा और न केवल आपके परिवार के लिए, बल्कि यह सामान्य रूप से समाज के लिए भी अपमानजनक होगा।

लेकिन यहां हमारे पास कट्टरपंथी शिष्यत्व के विवरण हैं। यीशु को बुलाया गया था, पिता के सामने उसका बुलावा, मैथ्यू अध्याय तीन, पद 16 और 17। यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

उसका मिशन सेवक के साथ-साथ राजा के मिशन के रूप में निर्धारित किया गया है। और अब यीशु शिष्यों को उसका अनुसरण करने के लिए बुलाते हैं। और उन्हें इस मामले में, और कई मामलों में, शायद आमतौर पर, नीचे की ओर गतिशीलता के लिए बुलाया जाता है।

कारीगर, मछुआरे, कर-संग्रहकर्ता, कुलीन नहीं थे, लेकिन वे गैलीलियन ग्रामीण इलाकों के किसानों की तुलना में सामान्य रूप से बहुत बेहतर स्थिति में थे। तो, मछली पकड़ने वाली सहकारी समितियों जैसे पारिवारिक व्यवसायों में भी, और मार्क का उल्लेख है कि परिवारों में से एक ने नौकरों को काम पर रखा था। साथ ही, ऐसा लगता है कि ये दोनों परिवार मछली पकड़ने के साथ-साथ काम भी कर रहे थे।

तो, यह केवल निर्वाह करने वाले मछुआरे खाने के लिए कुछ मछलियाँ प्राप्त करने के लिए अपना जाल नहीं डाल रहे थे। ये वे लोग थे जो मछली बेच रहे थे। और आम तौर पर गलील झील के आसपास, यदि आप जाल खरीद सकते हैं और अपने जालों की मरम्मत कर सकते हैं, अपने जालों को साफ कर सकते हैं तो आप काफी अच्छा जीवन यापन कर सकते हैं।

लेकिन वे अपनी आजीविका छोड़ने को तैयार थे। हालाँकि यह साल के हर मौसम में नहीं हो सकता है, क्योंकि कुछ ऐसे मौसम थे जब आप वास्तव में बरसात के मौसम के दौरान गलील के आसपास ज्यादा यात्रा नहीं कर सकते थे। लेकिन वर्ष के अन्य मौसमों के दौरान, वे यीशु का अनुसरण कर रहे थे।

इसलिए, उन्हें वर्ष के अधिकांश समय अपनी आजीविका छोड़नी पड़ी। और यीशु इसके लायक हैं। जैसा कि वह हमें अध्याय 13, छंद 44 से 46 में बताता है, राज्य का अतुलनीय मूल्य बाकी सभी चीजों के लायक है।

यीशु का अनुसरण करने के लिए हमें जो कुछ भी करना है वह उसके लायक है क्योंकि हम उसके साथ हमेशा जीवित रहेंगे। अब जब वे यीशु का अनुसरण करते हैं तो वे पूरी तरह से बेघर नहीं हो जाते। मैथ्यू अध्याय चार हमें बताता है कि यीशु कफरनहूम में बस गए थे।

तो, यीशु के पास रहने के लिए एक जगह थी, भले ही वह कहता है कि उसके पास अपना सिर छुपाने के लिए कोई जगह नहीं है। यह अतिशयोक्ति है। यह एक अतिशयोक्तिपूर्ण अतिकथन है।

लेकिन यह अभी भी संदेश देता है कि हमें बलिदान देने के लिए तैयार रहना होगा। मौसमी यात्रा। दिसंबर से मार्च तक इस क्षेत्र में बारिश का मौसम था।

30 से 50 दिनों तक बारिश होती रही। आप वास्तव में बहुत अधिक यात्रा नहीं कर सकते। किसान रोपण और फसल के मौसम के बाहर अधिक स्वतंत्र थे।

लेकिन जरूरी नहीं कि शिष्य हर समय यात्रा करते रहें। न ही यह उनके परिवार का पूर्ण अस्वीकार था। यहूदिया के भीतर अधिकांश चीजें, क्षमा करें, गलील के भीतर अधिकांश चीजें एक या दो दिन की पैदल दूरी पर थीं।

तो, या यदि वे नाव लेते हैं, तो आप जानते हैं, जरूरी नहीं कि वे हर समय अपने परिवारों से दूर रहें। लेकिन, आप जानते हैं, कभी-कभी यह मंत्रालय के लिए एक बलिदान भी हो सकता है, लेकिन यह पूरी तरह से आवश्यक नहीं है। बाद में, 1 कुरिन्थियों 9 में पॉल बताता है कि कैसे पतरस अपनी पत्नी को अपने साथ ले जाता है और अन्य शिष्य अपनी पत्नियों को अपने साथ ले जाते हैं।

पौलुस और बरनबास कहते हैं, ठीक है, हमारी पत्नियाँ नहीं हैं, परन्तु दूसरे चेले ऐसा करते हैं। इसलिए अक्सर वे उनके साथ यात्रा करने में सक्षम होते थे। शायद बच्चे बड़े हो गए थे, परिस्थितियाँ जो भी हों।

लेकिन वे अपने पारिवारिक व्यवसायों को पीछे छोड़ रहे हैं, लेकिन हमें इसे गलत तरीके से नहीं लेना चाहिए। क्योंकि यीशु मत्ती अध्याय 15 में भी कहते हैं, कि तुम्हें अपने पिता और माता का आदर करना चाहिए। वह अध्याय 19, श्लोक 9 में यह भी कहता है, तुम्हें अपनी शादी के प्रति वफादार रहना है, अपनी शादी को नहीं छोड़ना है।

इसलिए, वह परिवार को अस्वीकार करने के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि वह पहले चीजों के बारे में बात कर रहा है। यीशु किसी भी अन्य चीज़ से अधिक महत्व रखता है। रब्बी, बाद में, यीशु की पीढ़ी में रब्बियों के दो स्कूल, यीशु की पीढ़ी में फरीसी, मुझे कहना चाहिए, शम्मई और तलाल के स्कूल थे।

और वे आपस में इस बात पर वाद-विवाद करने लगे कि एक पति को अपनी पत्नी से कितने समय तक दूर रहने की अनुमति है। और यदि वह अब और दूर रहता, तो उन्होंने कहा, उसे तलाक लेने की अनुमति है। वह रब्बियों के पास जाती है और वे ऐसा कर सकते हैं, मैं ऐसा सुझाव नहीं दे रहा हूँ, लेकिन सिर्फ यह कह रहा हूँ कि यीशु के समय के फरीसियों ने कहा था कि पति को केवल इतने समय तक दूर रहने की अनुमति थी।

और उन्होंने इस बात पर बहस की कि यह एक सप्ताह था या दो सप्ताह क्योंकि उन्होंने वैवाहिक जिम्मेदारी को बहुत गंभीरता से लिया था। लेकिन उन्होंने यह जरूर कहा कि टोरा की खातिर, इसे लंबा करना पड़ सकता है। वहाँ एक रब्बी था, रब्बी अकीबा, जिसके बारे में उन्होंने बाद में बात की।

और मेरा मानना है कि यह सच्ची कहानी नहीं है, लेकिन यह दर्शाती है कि उन्होंने एक शिक्षक के पास जाकर टोरा के अध्ययन के लिए अपवाद बनाया। कि वह अपनी पत्नी से सात साल तक दूर रहा। और फिर वह सात साल बाद घर आ रहा है और वह घर के दरवाजे पर पहुंचता है और अपनी पत्नी को पड़ोसी से बात करते हुए सुनता है।

और पड़ोसी कह रहा है, राहेल, तुम इस आदमी से सात साल तक दूर रहने के बाद भी उससे प्यार कैसे कर सकती हो? उसने कहा कि यह टोरा की खातिर है। अगर वह सात साल और मुझसे दूर रहता, तब भी मैं उससे प्यार करता। इसके बाद, घर में गए बिना, निश्चित रूप से, अकीबा घूम गया और चला गया और सात साल तक अध्ययन किया और अपने हजारों शिष्यों के साथ वापस आ गया।

और अब फिर, यह कोई सच्ची कहानी नहीं है, लेकिन इस बात को दर्शाती है कि उन्होंने परिवार को बहुत गंभीरता से लिया, लेकिन उन्होंने टोरा के अध्ययन को भी बहुत गंभीरता से लिया। यीशु हर चीज़ से पहले आते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अपने परिवार की देखभाल न करें। यीशु चाहते हैं कि हम भी ऐसा करें।

वह चाहता है कि हम भी अपने परिवार से प्यार करें। लेकिन कभी-कभी जब वे संघर्ष में होते हैं, तो हमें चुनाव करना होता है और यीशु हमेशा पहले आते हैं। यीशु शक्ति के साथ परमेश्वर के शासन को प्रदर्शित करता है।

अध्याय चार, श्लोक 23 से 25। आपके पास यीशु के पहाड़ी उपदेश से पहले, मैथ्यू पाँच से सात तक यीशु के सार्वजनिक मंत्रालय का सारांश है। हमारे पास अगले प्रवचन खंड, यीशु द्वारा दिए गए अगले भाषण और मैथ्यू अध्याय 10 में अगले उपदेश से ठीक पहले यीशु के सार्वजनिक मंत्रालय का एक समान सारांश है।

यहां मैथ्यू में, मैथ्यू पांच से सात के ठीक पहले, यह यीशु के उपचार और शिक्षा के बारे में बात करता है। मैथ्यू 10 पर पहुंचने से पहले आपके पास मैथ्यू 9 के अंत में भी यही बात है। तो, यह कहता है कि वह इतने सारे लोगों को ठीक कर रहा था कि वे सीरिया के रोमन प्रांत में हर बीमार व्यक्ति को उसके पास ले आए।

अब, क्या इसका शाब्दिक अर्थ हर एक बीमार व्यक्ति है? संभवतः इसे ही हम अतिशयोक्ति कहते हैं। यहूदी शिक्षक और मैथ्यू भी अक्सर अतिशयोक्ति का प्रयोग करते थे, जो एक आलंकारिक अतिशयोक्ति थी। यह एक बात कहने के लिए भाषण का एक अलंकार था।

तो, इसका शाब्दिक अर्थ यह नहीं है कि गलील में हर एक व्यक्ति बीमार था। मेरा मतलब है, अन्यथा, प्रेरितों के काम की पुस्तक के पहले कुछ अध्यायों में चंगा होने वाला कोई नहीं होता। लेकिन किसी भी स्थिति में, वे बहुत से बीमार लोगों को यीशु के पास ला रहे थे।

और वह बीमारों को चंगा कर रहा था। वह उन आराधनालयों में सेवा कर रहा था जहाँ लोग लोकप्रिय शिक्षकों के आने और व्याख्या करने के लिए बहुत खुले थे, विशेष रूप से अच्छे वक्ता,

क्योंकि गैलीलियन आराधनालयों में, उनके पास हर आराधनालय के लिए एक पुजारी नहीं था। अधिकांश फरीसी यरूशलेम में थे।

उनके पास सभी आराधनालयों में घूमने और पढ़ाने या शास्त्री देने के लिए पर्याप्त फरीसी नहीं थे, विशेषकर बहुत अधिक जानकार शास्त्री नहीं थे। तो, यीशु आराधनालयों में शिक्षा दे रहे हैं और बीमारों को ठीक कर रहे हैं। क्या यीशु ने भीड़ खींची होगी? खैर, उपचार के लिए ख्याति रखने वाला कोई भी व्यक्ति बड़ी भीड़ को आकर्षित करता होगा।

इस बारे में सोचें कि प्राचीन विश्व में हमारा तिबरियास और अन्य जगहों पर कुछ गर्म झरने कैसे थे। और हमारा तिबरियास गलील में है। इन स्थानों पर बड़ी संख्या में लोग आते थे क्योंकि ऐसा माना जाता था कि गर्म झरनों में पवित्रता के गुण होते हैं जो उन्हें स्वास्थ्यवर्धक बनाते हैं।

तो, यह आश्चर्य की बात नहीं है। यीशु को एक उपचारक के रूप में ख्याति मिली। बहुत सारे लोग आकर उसका अनुसरण करने वाले हैं।

और वे बहुत दूर से आते हैं। उनमें से कुछ दूर-दूर से और गलील के बाहर सीरिया प्रांत में कहीं और से आते हैं। खैर, यह उस गैर-यहूदी मिशन को पूर्वनिर्धारित करने में मदद करता है जिसके बारे में हमने बात की है।

यह बलि आस्था के बारे में भी बात करता है। मुझे याद है कि जब मैं केन्या में पढ़ा रहा था तो मेरा एक छात्र मुझे अपनी बहन के बारे में बता रहा था कि कैसे उसकी बहन ने खुद को जमीन पर खींच लिया था। उसके पैर काम नहीं करते थे।

वे पूर्णतः निष्क्रिय थे। तो, वह बस खुद को जमीन पर खींच रही थी। और उसकी माँ बहुत चंगी होना चाहती थी।

और उसने सुना कि कोई चर्च में बीमार लोगों के लिए प्रार्थना करने जा रहा है, लेकिन वह इस नदी के उस पार बहुत दूर था। और उसे बच्चे को अकेले ही ले जाना होगा क्योंकि पिता ने कहा, नहीं, हमने प्रार्थना कर ली है। मैं बस दिल टूट गया हूँ।

मैं दोबारा ऐसा नहीं कर सकता। और मैं उस तरह की भावना को समझता हूँ। यह तब हुआ था जब कोई उपचार नहीं हुआ था।

उन्होंने प्रार्थना की और कोई उपचार नहीं हुआ। और कभी-कभी ऐसा होता है। फिर, उपचार वादा किए गए भविष्य के संकेत हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि इस उम्र में हर कोई हमेशा ठीक हो जाता है। और कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो धार्मिक रूप से सोचते हैं कि इस युग में हर किसी को ठीक हो जाना चाहिए। लेकिन अगर आप उनसे पूछें, क्या आपने जिनके लिए प्रार्थना की थी वे सब ठीक हो गए हैं? संभावना है कि वे आपको बताएंगे कि हर कोई, जिसके लिए मैंने प्रार्थना की थी, ठीक नहीं होता।

लेकिन किसी भी मामले में, हम जो भी स्पष्टीकरण देना चाहें, यह कुछ ऐसा है जिससे हमें इस दुनिया में अक्सर दुःख और दर्द से जूझना पड़ता है। लेकिन इस मामले में, माँ ने बच्चे को अपनी पीठ पर रख लिया और वह उसे ले गई। उसे नदी पार करनी थी।

यह बहुत, बहुत कठिन, कठिन यात्रा थी। और इस बार बच्चा ठीक हो गया। और वह व्यक्ति, वह मदरसा छात्र जो मुझे यह बता रहा था, वह इस बारे में जानता है क्योंकि यह उसकी छोटी बहन थी।

वह ठीक हो गई. तुरंत ठीक नहीं हुई, लेकिन एक-दो हफ्ते में ही वह ठीक हो गई। वह चल सकती थी.

और अब वह बड़ी हो गई है. उसकी शादी हो गयी है. उसके साथ दोबारा कभी नहीं हुआ।

तो कभी-कभी विश्वास के बलिदान कार्य, फिर से, यह गारंटी नहीं देते कि ईश्वर हमारे विश्वास के योग्य है, चाहे वह कुछ भी करे। लेकिन ये लोग बलिदान के तरीकों से अपना विश्वास व्यक्त करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि यीशु ही वह व्यक्ति थे जिनके पास उन्हें ठीक करने की शक्ति थी। लेकिन यह परिच्छेद हमें लोकप्रियता के बारे में एक चेतावनी भी देता है, क्योंकि यह परिच्छेद मैथ्यू के सुसमाचार के एक बड़े संदर्भ का हिस्सा है।

यदि हम केवल इस अनुच्छेद पर रुकें, तो हम सोच सकते हैं कि कहानी का नैतिक यह है कि आप भगवान की सेवा करते हैं, आप परीक्षण पास करते हैं, और भगवान आपका अभिषेक करेंगे, और हर कोई ठीक हो जाएगा। और भीड़ आपका अनुसरण करेगी और आपसे प्यार करेगी। लेकिन ध्यान रखें कि मैथ्यू अध्याय 27 में भीड़ चिल्लाती है, उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ।

लोकप्रियता अविश्वसनीय है. लोकप्रियता आती है और चली जाती है। जब यह हमारे पास हो, तो इसे यीशु के लिए उपयोग करें।

और जब हमारे पास यह नहीं है, तो यह ठीक है। हम परमेश्वर के सम्मान के लिए जीते हैं, अपने सम्मान के लिए नहीं। अब, संभवतः अध्याय 27 में, जो भीड़ चिल्लाती है, उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ, वही भीड़ नहीं है जो उसके पीछे चल रही है और यरूशलेम में आने पर उसका स्वागत कर रही है।

आप जानते हैं, वहाँ बहुत सारे गैलीलियन तीर्थयात्री यीशु की जय-जयकार कर रहे थे। वे जानते थे कि यीशु कौन था। भीड़ चिल्लाती है और उसे सूली पर चढ़ा देती है।

हम सुन रहे हैं कि यरूशलेम में उनके नेता उन्हें क्या बता रहे थे। लेकिन उस ऐतिहासिक अंतर के बावजूद, भीड़ में अभी भी कथात्मक निरंतरता है जो हमें बताती है कि आपको हमेशा लोकप्रियता नहीं मिलेगी। यह डेविड के साथ आया और चला गया।

यह हमारे साथ आता है और चला जाता है। जब तक यह आपके पास है तब तक इसका उपयोग करें। और याद रखें, यह यीशु ही हैं जिनका हम सम्मान करने आए हैं।

और मैथ्यू इस पर बार-बार जोर देता है। हम शिष्य हैं और नौकर गुरु से बड़ा नहीं है। तो, आइए उसका सम्मान करें।

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। मैथ्यू 3-4 पर यह सत्र 6 है।